'विद्यानिवास मिश्र के लेखन का केंद्र बिंदु भारतीयता'

18 जून को साहित्य अकादेमी ने पंडित विद्यानिवास मिश्र के जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। अकादेमी सभाकक्ष, नई दिल्ली में संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि विद्यानिवास मिश्र ललित निबंधकार के रूप में विख्यात थे परंतु उनका कृतित्व व्यापक है। उनके लेखन के केंद्र में सदैव भारतीयता रही है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि जब पूरा भारत फ्रॉयड और मार्क्स की आँधी में बह रहा था तो दो-चार लोग ही ऐसे थे जिन्होंने भारतीयता के परचम को बुलंद रखा उनमें पंडित विद्यानिवास मिश्र अग्रणी थे। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक गोविंद मिश्र ने दिया। संगोष्ठी में बीज-भाषण प्रतिष्ठित हिंदी विद्वान गिरीश्वर मिश्र ने प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र जो ललित निबंधकार एवं संपादक के रूप में विद्यानिवास मिश्र शीर्षक से था, की अध्यक्षता श्याम सुंदर दुबे ने की एवं चंद्रकला त्रिपाठी और दयानिधि मिश्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दयानिधि मिश्र ने विद्यानिवास मिश्र की 21 खंडों में रचनावली के संपादन के अनुभव सभी के साथ साझा किये। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादमी द्वारा विद्यानिवास मिश्र पर निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन भी किया गया। दूसरे दिन चार सत्रों में विद्यानिवास मिश्र के कला चिंतन, आलोचना साहित्य लोक संस्कृति पर बात की गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान, छात्र-छात्राएँ, शोधार्थी और पत्रकार उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अकादमी के उपसचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।